APPENDIX - IV- A

Format for Outline (Synopsis) of Proposed Research work

(to be supplied in Four copies)

(Reference Ord. 124.11)

1. Name of Scholar (In English) SHYAMA RAM
   (In Hindi) श्यामा राम
2. Title of the Research Work :
   (In English) - Poetry of Saint Poet Dariyav Of Ramsnehi Sampraday : A Perusal
   (In Hindi) - रामस्नेही संप्रदाय के संत कवि दरियाव का काव्यः एक अनुशीलन
3. Location
   a. Institution/Department where the work is be done
      Department of Hindi SPC Govt. Collage, Ajmer (Rajasthan)
   b. Geographical area of Investigation, if any :- NIL
4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based onthe review)
7. Major Hypothesis.
8. Research methodology.
9. List of references cited.

11-7-18

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

11-7-18

Name and Signature of supervisor with date & seal.

...mrat Prithviraj Chauhan
Govt. College, Ajmer

Scanned by TapScanner

रामस्नेही सम्प्रदाय के संत कवि दरियाव का काव्य :– एक अनुशीलन

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से कला संकाय में पीएच. डी. (हिन्दी) पंजीयन हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

शोध निर्देशिका
डॉ. किशनी फुलवानी
सहायक आचार्य – हिन्दी
स.पृ.चौ.राज.महाविद्यालय
अजमेर

शोधार्थी
श्यामा राम
व्याख्याता –हिन्दी
रा.उ.मा.वि. जड़ाऊ कलां
जिला–नागौर (राज.)

शोध केन्द्र
स.पृ.चौ. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
वर्ष–2017

Scanned by TapScanner

विषय प्रवेश :–

हमारे साहित्यिक पुरखों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार सुस्पस्ट कालखण्डों में वर्गीकृत किया है जो क्रमशः इस प्रकर है 1. आदिकाल 2. भक्तिकाल 3. रीतिकाल 4. आधुनिक काल। जॉर्ज अब्राहिम ग्रियर्सन ने दूसरे कालखण्ड भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा। क्योंकि इस कालखण्ड (1350 ई. से 1650 ई.) में हिन्दी साहित्य अपनी चरमोत्कर्स उन्नति को प्राप्त हुआ था। उच्च कोटि की काव्य रचना आध्यात्मिकता एवं समाज चेतना के कारण भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। मोनियर विलियम्स के अनुसार 'भक्ति' शब्द की व्युत्पति संस्कृति की 'भज्' धातु में 'वितन्' प्रत्यय के जुड़ने से हुई है। जिसका अर्थ होता है – अपने उपास्य (आराध्य) भगवान के ऐश्वर्य में भाग लेना। भजः यानि भाग लेना। भक्ति शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख 'श्वेताश्वेतर उपनिषद 6/33 में मिलता है। अनेक विद्वानों ने भक्तिकालीन साहित्य के उदय के अनेक कारण बताया है आ शुक्ल में – मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दू जनता को प्रवाहित किये जाने के कारण हिन्दू कवि भारतीय कवि भक्ति साहित्य के लेखन की ओर अग्रसर हुए (एक हताश हिन्दू ज़ाति की मनोवृत्ति का परिणाम भक्ति आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शुक्ल के मत का खंडन करते हुए कहा कि "इस्लाम भारत मे न आया होता तो भी भक्ति का बारह आना वैसा ही होता, जैसा आज है"।)

भक्ति आंदोलन की शुरूआत दक्षिण भारत मे हुई थी, परन्तु धीरे–धीरे यह संपूर्ण भारत मे फैल गया। इसकी उत्पत्ति के संबंध में निम्न श्लोक दृष्तत्प है

उत्पन्ना द्रविडे चाहं वृद्धि कर्नाटके गता।
क्वचित्–क्वचित् महारांष्ट्र, गुर्जरे जीर्णतां गतां।।

भक्तिसाहित्य का उदय मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल से माना जाता है।

भक्तिकाल का विभाजन–

दो धाराए– 1. निर्गुण काव्यधारा 2. सगुण काव्यधारा

1. निर्गुण काव्यधारा –जिन भक्त कवियों के द्वारा निराकाट ईश्वर की उपासना की गई, उनके द्वारा रचित काव्य को ही निर्गुण काव्य धारा कहा गया–

दो भेद– – 1. ज्ञानाश्रमी काव्यधारा (संत काव्य)

2. प्रेमाश्रयी काव्य धारा (सूफी काव्य)

2. सगुण काव्यधारा – जिन भक्त कवियो के द्वारा साकार ईश्वर (ईश्वर का कोई रूप मानकर) की उपासना की गई उनके द्वारा रचित काव्य को सगुण भक्ति काव्य धारा कहा गया।

दो भेद – 1. कृष्ण भक्ति काव्यधारा

2. राम भक्ति काव्यधारा

Scanned by TapScanner

ज्ञानाश्रयी काव्य धारा या संत काव्यधारा ज्ञानाश्रयी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीर माने जाते है। सामान्यतः संतों के द्वारा रचा गया काव्य संतकाव्य कहलाता है, परंतु हिन्दी में निर्गुण उपासक ज्ञानमार्गी कवियों के द्वारा रचा गया काव्य संतकाव्य कहलाता है।

संतमत का प्रारंभ – भारत के संतमत का प्रारंभ 1267 ई. में संत नामदेव (विठोबा का भक्त) के द्वारा किया गया है। इस निर्गुण काव्य के ज्ञानाश्रयी काव्य धारा का नाम आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने दिया तथा इसी काव्यधारा को 'संत काव्य' का नामकरण डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा किया गया।

संत साधना का साहित्यिक स्वरूप सर्वप्रथम पंदरपुर (महाराष्ट्र) से प्रारंभ माना जाता है। संत काव्य का मुख्य दार्शनिक आधार शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित 'अद्वैत दर्शन' है को माना जाता है। इस दर्शन के तीन सूत्र मुख्यतः है–

1. ब्रह्म सत्य जगत्मिथ्या
2. सर्व खल्विदं ब्रह्म
3. अहं ब्रह्मास्मि।

- संत संप्रदाय विश्व संप्रदाय है और उसका धर्म विश्वधर्म है। विश्वधर्म का मूलाधार है– हृदय की पवित्रता।
- भक्तिकाल की समयावधि में राजस्थान में भी निर्गुण संत संप्रदाय के संत कवियों द्वारा अपने संत साहित्य के माध्यम से जनता की सोई हुई आशाओं को जगाने का काम करते थे। निर्गुण संत संप्रदाय में विश्नोई संप्रदाय, जसनाथी संप्रदाय, गुदड़ संप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय, रामस्नेही संप्रदाय, दादू पंथ, कबीर पंथ आदि आते है। इन संप्रदाय के संत कवि अपने–अपने संत साहित्य के माध्यम से अपने संप्रदायों की विचारधारा को जनता तक पहुंचाते थे।

रामस्नेही सम्प्रदाय

राजस्थान में रामस्नेही संप्रदाय की चार मुख्य पीठें मानी गई है:–

1. रेण (नागौर) – आदि प्रवर्तक – श्री दरियाव जी महाराज
2. सिंहथल (बीकानेर) – आदि प्रवर्तक – श्री हरिरामदास जी महाराज
3. शाहपुरा (जयपुर) – आदि प्रवर्तक – श्री रामचरण जी महाराज
4. खेड़ापा (जोधपुर) – आदि प्रवर्तक – श्री रामदास जी महाराज

Scanned by TapScanner

रामस्नेही संत साहित्य की विशेषताएः–

1. निर्गुण ब्रह्म की उपासना
2. गुरू की महत्ता
3. योग व भक्ति का समन्वय
4. अनुभूति की प्रामाणिकता व शास्त्रज्ञान की अनावश्यकता
5. आडम्बरवाद का विरोध
6. जातिवाद का विरोध
7. समानता के प्रेम पर बल
8. सहज साधना पर बल
9. एकेश्वरवाद का समर्थन
10. आचरण की पवित्रता पर बल
11. काव्य में लोक भाषा का प्रयोग
12. हिन्दू–मुस्लिम एकता का समर्थन
13. धार्मिक रूढ़ियों व सामाजिक कुरीतियों व कर्मकांड का खुलकर विरोध करना
14. लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक/आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति
15. रहस्यवाद का प्रभाव

रामस्नेही सम्प्रदाय के संत कवि दरियाव का जीवन परिचयः–

राजस्थान में रामस्नेही सम्प्रदाय की चार मुख्य पीठों में एक पीठ नागौर जिले में रेण ग्राम में स्थित है। इस पीठ के आदि आचार्य श्री दरियाव माने जाते है। संत साहित्य में 'दरिया साहब' नाम के दो संत माने जाते है। एक का जन्म व कार्यक्षेत्र बिहार था और दूसरे का मारवाड़ (राजस्थान) था। इसलिए इन्हें क्रमशः दरिया साहब बिहार वाले और दरिया साहब मारवाड़ वाले कहकर संबोधित किया जाता है।

दरिया साहिब के अनुयायी मानते है कि इनके पिता का नाम मनसा राम हिन्दू खत्री (मारवाड़ वाले) परिवार के थे और इनकी माता का नाम गीगाबाई था। जबकि राजस्थान के प्रसिद्ध कवि डॉ. शक्तिदान कविया के अनुसार संत दरियाव का जन्म एक मुसलमान पिंजारा (धुनिया) के घर हुआ था।

पदमदास जो संत मोतीराम के शिष्य और संत कवि दरियाव के प्रशिष्य थे, वह भी इस मत से सहमत थे कि इनका जन्म जैतारण गांव में एक मुसलमान धुनिया परिवार मे हुआ था। संत दरियाव ने अपनी वाणी मे अपने आप को धुनिया कहा है–

Scanned by TapScanner

जो धुनिया तो भी मैं राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मतिहीन, तुम तो हौ सिरताज हमारा।।

राजस्थान में एक दौर ऐसा भी आया जब बार–बार होनेवाले बाहरी हमलों के कारण समाज में अशांति और अस्थिरता का माहौल बन गया। कहा जाता है इससे दुखी होकर दरिया साहिब के पिता मनसा राम तथा उनकी माता गीगाबाई ने द्वारिका जाने का निर्णय लिया। वहाँ पर वे कई महीनों तक प्रभु की भक्ति में लीन रहे। ऐसा माना जाता है कि भगवान की कृपा से वि. सं. 1733 भाद्रपद कृष्ण जन्माष्टमी के दिन अचानक उन्हें दरिया (समुद्र) की लहरों पर तैर रहे कमल के पुष्प पर बैठा एक अत्यंत तेजस्वी बालक दिखाई दिया। वे दोनों ओर दौड़ पड़े और बालक को उठाकर हृदय से लगा लिया। बालक को पाकर अपने आप को धन्य मानते हुए वे उसे लेकर वापस जैतारण लौट आए। दरिया से प्राप्त होने के कारण लोग इन्हें 'दरियाव' नाम से पुकारने लगे।

पदमदास द्वारा लिखी उनके बचपन की घटनाओं में एक प्रसंग यह भी है कि जैतारण में एक दिन बालक दरियाव सो रहे थे कि तभी एक सर्प इनके समीप आया और फन फैलाकर इन पर छाया करने लगा। जब माँ गीगाबाई ने यह देखा वो हैरान रह गईं और भयभीत भी हुईं। माता–पिता ने क़ाज़ी–मुल्लाओं को बुलाकर इस घटना का मर्म जानना चाहा। क़ाज़ी ने कहा, "तुम्हारा पुत्र अल्लाह की कला का अंश है। यह पैग़ंबर जैसे लक्षणों वाला है। बादशाह, प्रजा, छत्रधारी, धनधारी सभी इसके चरणों में शीश नवाएँगे।" इसी प्रकार एक बार बालक दरियाव को देखकर एक ज्योतिषी ने भी भविष्यवाणी की थी कि समय आने पर यह बालक महान भगवद् भक्त होगा।

पिता के जीवित रहने तक दरिया साहिब जैतारण में ही रहे। लेकिन माता गीगाबाई अपने पति के देहांत के बाद बालक दरिया को साथ लेकर अपने पिता के गाँव रेण चली गईं और वहीं रहने लगीं। उसके बाद दरिया साहिब ने अपना पूरा जीवन रेण में ही बिताया।

कहा जाता हे कि दरिया साहिब ने लगभग 12 वर्ष की उम्र में मदरसे में अरबी–फ़ारसी भाषा सीखी और क़ुरान तथा कलमा पढ़ना सीखकर क़ुरान की आयतें याद कर ली। एक बार बालक दरियाव अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे, उसी समय स्वरूपानंद और शिवप्रसाद नामक दो पंडित उधर से गुज़रे। वे दोनों उस बालक के तेजस्वी मुखड़े को देखकर इतने प्रभावित हुए कि माता गीगाबाई के पास जाकर बालक दरियाव को अपने साथ काशी ले जाने की विनती की ताकि वह शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान प्राप्त कर सके। माता गीगाबाई ने इसके लिए अनुमति दे दी। इस प्रकार दरिया साहिब ने काशी में शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया और गीता, वेद, उपनिषद् आदि का अध्ययन करके रेण वापस लौट आए।

दरियाव–ग्रंथावली के अनुसार इन्हें 'दरिया सा' कह कर भी पुकारा जाता है। राजस्थानी भाषा में शाह या साहिब को संक्षेप में 'सा' कहा जाता है। समय आने पर इनका विवाह हुआ और इनके घर तीन पुत्र हुए–कुशाल चंद, सम्मन शाह और हंस राम।

सतगुरु की शरणः–

दरिया साहिब रेण गाँव में रहनेवाले सुरतराम नाम के निरंजनी साधु के घर सत्संग सुनने जाया करते थे। एक दिन उन्होंने सत्संग में सुना कि राम–नाम का स्मरण से ही परमात्मा कि प्राप्ति हो सकती है। सतगुरु वह है जो शास्त्रों में छिपे हुए ज्ञान का ज्ञाता होने के साथ–साथ, प्रभु के प्रति पूरी तरह समर्पित होता है और जिसने अपने सतगुरु से दीक्षा लेकर अंतर्मुखी अभ्यास द्वारा प्रभु से मिलाप कर लिया होता है। ऐसा सतगुरु साधक को भक्ति मार्ग का सही उपदेश और युक्ति देकर उसके हर तरह के भ्रम और शंकाएँ दूर करने का सामर्थ्य रखता है। इसलिए आत्मा के उत्थान के लिए सतगुरु की शरण लेना आवश्यक है। ये

Scanned by TapScanner

वचन सुनकर वह सतगुरु से दीक्षा लेने के लिए उतावले हो गए। अब वह इसी इंतज़ार में रहने लगे कि कब उन्हें पूर्ण सतगुरु मिलेंगे जो उन्हें सच्ची भक्ति का मार्ग दिखाएँगे। उन्होंने कई ब्राह्मण, योगी, जैन मुनि, संन्यासी, दरवेश आदि से प्रभु–प्राप्ति की युक्ति के बारे में पूछा, परंतु उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। तब उन्होंने सतगुरु के मिलाप के लिए परमात्मा से प्रार्थना की, ताकि उनका जीवन कहीं सांसारिक धंधों में ही व्यर्थ न बीत जाए और वह प्रभु के दर्शन से वंचित न रह जाएँ।

लेकिन रामस्नेही संप्रदाय के अनुयायियों का मानना है कि एक दिन दरिया साहिब भागवत और उपनिषदों का पाठ कर रहे थे, तभी उनकी नज़र 'गुरु महिमा' विषय पर ठहर गई। इसी के फलस्वरूप उन्हें सतगुरु की शरण में जाने की प्रेरणा मिली और साथ ही साथ मन में तड़प पैदा हुई। तब गुरु से मिलाप के लिए उनकी हालत विरहिणी जैसी हो गई।

वह प्रभु के विरह में इतना तड़प उठे के खाना–पीना तक भूल गए और सतगुरु की खोज में इधर–उधर भटकते हुए उन्होंने कई यात्राएँ कीं। परमात्मा बड़ा दयालु है, वह भक्त की सच्ची लगन देखकर उसकी मनोकामना को अवश्य पूरा करता है। अचानक एक दिन संत प्रेमदास जी ने वि. सं. 1769 की कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन दरियासाहब को राम–राम की दीक्षा प्रदान की। उस समय दरिया साहब की आयु 36 वर्ष थी।

प्रेम दास जी शब्दमार्गी थे, इसलिए उन्होंने अपने शिष्य दरिया को सुरत–शब्द योग के ज़रिये प्रभु–प्राप्ति की युक्ति सिखाई। उन्होंने दरिया को राम–नाम सुमिरन द्वारा अपने मन को बाहरी वृत्तियों से समेटकर अंतर में एकाग्र करने का उपदेश दिया। जैसे–जैसे उसकी साधना गहरी होती गई, उसकी सुरत राम–नाम यानी शब्द से जुड़ने लगी और अन्त में शब्द में समाकर शब्द का ही रूप हो गई। यही आत्मा का परमात्मा में समा जाना है:

राखे सुरति शब्द ही माहीं। शब्द छाँडि कहुँ अन्त न जाहीं।
तब रसना सिर छूटे धारा। चलै अखँड नहि खँडे लगारा।।

अपने सतगुरु से मिलाप करते हुऐ दरिया साहब कहते हैं:

सोता था बहु जन्म का, सतगुरु दिया जगाय।
जन दरिया गुर सब्द सौं, सब दुख बिलाय।।

सतगुरु ने मुझे जन्म से जोड़कर जन्म–जन्मांतर की ग़फ़लत की नींद से जगा दिया, जिससे मेरे सारे दु:ख–दूर हो गये।

सतगुरु की दया–मेहर से दरिया साहब अपनी साधना में बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ने लगे। एक वर्ष और सात माह के थोड़े समय में दरिया साहिब की आंतरिक साधना सफल हो गई। इस संदर्भ में वह कहते है: "किरपा कर चरनों लिया, मेटा सकल जंजाल।।" गुरु ने कृपा करके मुझे अपनी शरण में ले लिया जिससे मेरे सारे जग–जंजाल मिट गए। जीते–जी परमात्मा में समा जाने के अनुभव का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा है:

दरिया सूरति सर्पनी, चढ़ी ब्रह्म के माँय।
जाय मिली परब्रह्म से, निरभय रही समाय।।

धीरे–धीरे सारे मारवाड़ में दरिया साहिब की महिमा होने लगी। परिवार की ज़िम्मेदारी निभाते हुए भी वह भक्ति में लीन रहते थे। उनके सहज भक्ति मार्ग से लोग बड़े प्रभावित हुए। धीरे–धीरे उनके अनेक शिष्य बन गए। दरिया–पंथियों का विश्वास है कि दरिया साहब के जन्म से 100 वर्ष पहले दादू साहब ने यह भविष्यवाणी थी:

Scanned by TapScanner

देह पड़ंतॉं दादू कहै, सौ बरसॉं इक संत।
रैन नगर में परगटै, तारै जीव अनंत।।

दूर–दूर से लोग दरिया साहिब के दर्शन के लिए आने लगे। जीवो का उद्धार करने के लिए उन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण भी किया।

दरिया साहब घर–गृहस्थी की जिम्मेदारी निभाने के साथ–साथ अपना समय रूहानी अभ्यास में लगाया करते थे। किसी ने एक बार दरिया साहब से पूछा कि आप का सारा दिन रूई धुनने में बीत जाता है और आप घर–गृहस्थी की सारी परेशानियों का भी सामना करते हैं। क्या यह सब आपकी भक्ति में बाधा नहीं डालते हैं ? आप यदि वैरागी हो जाते तो लोग आपके उपदेश से अधिक लाभ प्राप्त करते। तो दरिया साहिब ने कहा:

हाथ काम मुख नाम है, हिरदै साँची प्रीत।
दरिया गृही साध की, ऐही उत्तम रीत।।

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों में श्रेष्ठ है, इसमें हाथ काम–काज में लगे रहते हैं, जबकि मुँह से राम–राम का सुमिरन चलता रहता है। मैंने यही वृत्ति अपना रखी है और सभी को ऐसी वृत्ति अपनाने का उपदेश देता हूँ। उनके शिष्य भी अपने–अपने घरों में रहकर ही साधना किया करते थे।

नारी के प्रति दरिया साहिब का दृष्टिकोण बहुत उदार था। उनका मानना था कि नारी जननी है, इसलिए वह मनुष्य के पतन का कारण हो ही नहीं सकती। उसकी निंदा करके श्रेष्ठ समाज की कल्पना करना मूर्खता है:

नारी जननी जगत की, पाल पोस दे पोष।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष।।

अपने एक शिष्य के सेवा भाव, श्रद्धा और प्रेम के बारे में दरिया साहब के जीवन का एक दृष्टांत है कि एक बार वह महाराजा विजय सिंह के निमंत्रण पर मेड़ता गए और वहाँ प्रतिदिन सत्संग करने लगे। वहाँ का एक निवासी फतैचन्द भोजग भी सत्संग सुनने आता था। एक दिन उसने दरिया साहिब को अपने घर पर भोजन ग्रहण करने के लिए विनती की। दरिया साहिब ने फतैचन्द के घर भोजन का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। फतैचन्द इतना भावुक हो गया कि उसने उनको घी के स्थान पर तेल परोस दिया और उनके भोजन करने के बाद फतैचन्द को इस भूल का पता चला। उसने दरिया साहिब से अपनी इस भूल के लिए क्षमा माँगी। दरिया साहिब ने कहा कि दुःखी होने की कोई बात नहीं है। उन्हें तेल में भी घी का ही स्वाद आया, क्योंकि उसकी श्रद्धा और प्रेम ने तेल को घी में बदल दिया। उन्होंने फतैचन्द को दिलासा दिया कि उस भोजन में उन्हें इतना रस मिला जो राजा द्वारा भेजे हुए भोजन में भी कभी नहीं मिला।

देह त्यागः–

दरिया साहिब के परम धाम सिधारने के बारे में पदमदास ने लिखा है कि उपदेश देते–देते दरिया साहिब का शरीर शिथिल होने लगा। मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णमासी सं. 1815 को 85 वर्ष, 112 दिन की आयु में वह ध्यानमग्न होकर इस भौतिक शरीर का त्याग करके परम धाम सिधार गए:

बरस बयासी सात पख, सात दिन सिरताज।
दरिया धाम पधारिया, सार्‌या सबका काज।।

Scanned by TapScanner

दरिया साहिब अपने समय के उच्च कोटि के महात्मा और महान शब्दमार्गी संत हुए थे। उनकी वाणी से लोगों को न केवल उस समय में भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिली, बल्कि उनकी वाणी से आज भी भक्तों को मार्गदर्शन मिल रहा है।

रचनाओं का परिचयः–

दरिया साहिब के दोहों और पदों की संख्या लगभग एक लाख मानी गई है, परंतु इस समय उनकी बहुत कम वाणी उपलब्ध है। इस बारे में यह प्रसंग प्रचलित है कि एक बार उनके किसी शिष्य ने उन्हें एक दोहा पढ़कर सुनाया और फिर उनके कहने पर उनकी सारी वाणी को लाखा सागर के अथाह जल में प्रवाहित कर दिया। वह दोहा इस प्रकार हैः

अनुभव झूठा थोथरा, निर्गुण सच्चा नाम।
परम जोत परचे भई, तो धूंआ से क्या काम।।

ऐसा भी माना जाता है कि उनके मामा का पुत्र फतेह राम उनसे बहुत द्वेष रखता था। एक बार उसने उनकी वाणी के कुछ पन्नों को चुराकर उन्हें आम रास्ते में फेंक दिया। जब दरिया साहिब अपने शिष्यों के साथ राम सरोवर में स्नान करने के लिए वहाँ से गुज़रे तो उन्होंने देखा कि उनकी वाणी के पन्नों को पैरों से रौंदा जा रहा है। इन पन्नों में एक जगह लिखा था ''आत्मराम सकल घट भीतर।'' इन शब्दों को पढ़कर दरिया साहिब को बहुत अफ़सोस हुआ और उन्होंने कहा कि कलियुग में इस वाणी का आदर नहीं होगा। इसलिए उन्होंने वाणी के पन्नों को जल में प्रवाहित कर दिया।

वाणी के इस प्रकार नष्ट हो जाने से उनके शिष्य बहुत दुःखी हुए। तब दरिया साहिब ने सबकों दिलासा देते हुए केवल राम–राम की साधना यानी भजन–बंदगी करने को कहाः

सकल ग्रन्थ का अर्थ है, सकल बात की बात।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन–रात।।

इनके शिष्यों को जितनी वाणी जुबानी याद थी उसी के आधार पर सामग्री इकट्‌ठी करके, उसे लिखित रूप दिया गया। उनकी साखियों और शब्दों की संख्या लगभग 700 है। संत साहित्य में उनकी वाणी 'श्री अनुभव गीता' के नाम से प्रसिद्ध है।

दरिया साहिब ने अनेक विषयों पर साखियाँ और पद कहे हैं। जिसमें सत्संग के महत्त्व और सतगुरु की महिमा के बारे में बड़े विस्तार से वर्णन किया गया है। मुक्ति के दाता सतगुरु के मार्गदर्शन द्वारा ही भक्त भगवान से मिलाप कर सकता है। दरिया साहिब की अंतर्मुख अभ्यास संबंधी वाणी में उनके गूढ़ अभ्यास और अनुभव की झलक मिलती है। उनकी वाणी में भक्त और भगवान के मिलाप का भी बहुत सुंदर वर्णन है। जब भक्त अपना ध्यान एकाग्र करके सुन्न समाधि की अवस्था में उस निर्गुण, निराकार राम (परमात्मा) की अंतर्मुख भक्ति में इतना मग्न हो जाता है कि उसे किसी की सुध–बुध ही नहीं रहती, तब वह परमात्मा से एकरूप हो जाता है।

इनकी वाणी में बोलचाल की मारवाड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है जिसमें ब्रज भाषा का भी प्रभाव दिखाई देता है। फ़ारसी–अरबी शब्दों, जैसे रहीम, हवाल, दरद, हुकुम, सुलतान, ग़लतान, गुज़रान, शैतान, ख़बर, दीवाना, मंज़िल, हाज़िर, दरवेश आदि का भी प्रयोग हुआ है। भाषा सहज और मधुर है जो हृदय को छू लेती है तथा अर्थ ग्रहण करने में आसानी रहती।

Scanned by TapScanner

पूर्ववर्त्ती अध्ययन :–

रामस्नेही सम्प्रदाय के संत कवि दरियाव के काव्य का संकलन 'वाणी श्री' व दरियाव ग्रंथावली के नाम से प्रकाशित हुआ है। इनका साहित्य समय–समय पर रामस्नेही सम्प्रदाय की अन्तर्राष्ट्रीय पीठ रेण से प्रकाशित किया जाता रहा है। वर्तमान पीठाधीश श्री हरिनारायण शास्त्री ने संत दरियाव के विचारों को श्री दरियाव दर्शन व श्री दरियाव दिव्या वाणी नाम से प्रकाशित किया है। श्री जनक गोरवानी ने संत कवि दरियाव के काव्य को राधास्वामी सत्संग व्यास पंजाब से संत दरिया (मारवाड वाले) के शीर्षक से प्रकाशित करवाया।

Scanned by TapScanner

शोध के उद्देश्य एवं प्रविधि :–

शोधार्थी का शोध प्रबंध रामस्नेही सम्प्रदाय के संत कवि दरियाव का काव्य :– एक अनुशीलन शीर्षक से इन के काव्य को शोध का आधार बनाने की प्रक्रिया में एक छोटा सा प्रयास होगा।

भारतीय जीवन दर्शन पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारी संस्कृति के अतीत को या उसकी नींव को हिला–हिलाकर गिराने का प्रयास कर रहा है। जिससे हमारी संस्कृति व समाज में विभिन्न कुरीतियाँ व गुनाहों का काला अंधकार छा रहा है और समाज के मानवीय मूल्य नष्ट हो रहें हैं। तथा इन्हें बचा सकता है तो वो हमारा संत साहित्य ही है। भक्ति के मार्ग से विमुख लोगों को भक्ति का सही परिचय कराना।

संत कवि दरियाव के साहित्य पर एक नवीन व मौलिक दृष्टिकोण से विचार किये जाने की महती आवश्यकता है। शोधार्थी इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु ''रामस्नेही सम्प्रदाय के संत कवि दरियाव का काव्यः– एक अनुशीलन'' पर अपना शोध प्रारूप प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास कर रहा है।

1. भक्तिकाल की निर्गुण परंपरा में संत कवि दरियाव का स्थान निर्धारित करना। क्योंकि राजस्थान की निर्गुण परंपरा में अनेक पंथ व संप्रदायों के नाम आते है। जिनमें रामस्नेही संप्रदाय के संत कवि का साहित्य जो अभी तक आम जनता तक नहीं पहुचा है, उसे लोगों तक पहुंचाना।
2. एक संत कवि जिनका साहित्य समाज के सामने लाकर समाज को नई दृष्टि प्रदान करना।
3. संत कवि के साहित्य में मध्यकाल की निर्गुण पंरपरा के संत कवियों की तरह नारी चेतना, गुरू–महिमा का उल्लेख करना। क्योंकि हिन्दी साहित्य की निर्गुण संत पंरपरा में संत कवि का साहित्य महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।
4. प्रकाशित साहित्य के अतिरिक्त इनका अप्रकाशित साहित्य जो आम जनता तक नहीं पहुंचा है। उसे शोध के माध्यम से लोगों तक पहुंचाना। जो शोध के लिए अपेक्षित है। उन्हें समाज के सामने लाकर निर्गुण काव्य परंपरा में रामस्नेही सम्प्रदाय की मुख्य धारा में लाना ही मेरे शोध का आधार स्तंभ है।

आशा और विश्वास है कि प्रस्तुत शोध प्रबंध से भविष्य में निर्गुण संत परंपरा में इस शोध के आधार पर संत कवि दरियाव के काव्य को एक नयी दिशा मिलेगी।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न प्रविधियों का उपयोग किया जाएगा :–

1. ऐतिहासिक शोध प्रविधि
2. वर्णनात्मक शोध प्रविधि
3. समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि
4. साहित्यिक अनुसंधान शोध प्रविधि
5. आगमनात्मक शोध प्रविधि

इनके अतिरिक्त :–

1. प्रश्नावली विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. भ्रमण विधि
4. अवलोकन विधि

अतः इनके द्वारा भी शोध कार्य को उत्कृष्ट मापदंड देने का प्रयास होगा।

Scanned by TapScanner

शोध विषय के संभावित अध्याय:–

1. अध्याय– प्रथम

राजस्थान में रामस्नेही संत परंपरा का संक्षेप मे परिचय

1.1 संत शब्द व रामस्नेही शब्द की व्याख्या

1.2 संत व भक्त में अंतर

1.3 राजस्थान में रामस्नेही पंरपरा का उद्‌गम एवं चरमोत्कर्ष

1.4 राजस्थान में रामस्नेही संप्रदाय की चार मुख्य पीठों का परिचय एवं उनके आदि प्रवर्तकों का परिचय

1.5 युग निर्माण की परिस्थितियों में रामस्नेही सम्प्रदाय की आवश्यता व प्रासंगिकता

1.6 मूल्यांकन

2. अध्याय– द्वितीय

रामस्नेही संप्रदाय की रेण पीठ : एक परिचय

2.1 रेण पीठ की भौगोलिक स्थिति

2.2 रेण पीठ की स्थापना

3. अध्याय– तृतीय

संत कवि दरियाव का जीवन एवं कृतित्त्व

3.1 जीवन परिचय

3.2 कृतित्त्व

4. अध्याय– चतुर्थ

संत कवि दरियाव का काव्य परिचय

4.1 काव्य कृतियों का परिचय

5. अध्याय– पंचम

संत कवि दरियाव के समय और समाज

5.1 भौगोलिक स्थिति

5.2 सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

5.3 राजनैतिक स्थिति

Scanned by TapScanner

5.4 धार्मिक स्थिति

5.5 आर्थिक स्थिति

6. अध्याय– षष्ठम

संत कवि दरियाव का दार्शनिक आधार

6.1 गुरू महिमा

6.2 प्रभु नाम स्मरण की महिमा

6.3 दार्शनिक चिंतन धारा

6.4 साधु भाव चिंतन धारा

7. अध्याय– सप्तम्

संत कवि दरियाम की भक्ति चेतना

7.1 भक्ति महिमा का वर्णन

7.2 भक्ति संबंधि पद

7.3 भक्ति के विविध आयाम

8. अध्याय– अष्ठम्

संत कवि दरियाव का काव्य सौन्दर्य

8.1 अनुभूति पक्ष का सांगोपांग वर्णन व उसके विविध आयाम

8.2 अभिव्यक्ति का अनूठा वैभव व उसके विविध आयाम

8.3 मूल्यांकन

9 अध्याय– नवम्

संत कवि दरियाव का सामाजिक हस्तक्षेप

9.1 समाज में उपस्थित मान्यताएँ एवं कवि के विचार

9.2 समाज दर्शन

10. अध्याय– दशम्

"परिशिष्ठ"

10.1 उपसंहार

10.2 संदर्भ ग्रंथ सूची

Scanned by TapScanner

शोध कार्य की वांधित अवधि (वर्षवार):-

1. छ माह विषय संबंधि साहित्य का अध्ययन
2. अगले छः माह एकत्रित सामग्री का विवेचन एवं विश्लेषण
3. अगले छः माह आलोच्य विषय का विस्तृत अध्ययन करना एवं दो अध्यायों का लेखन कार्य।
4. अंतिम छः माह शेष अध्यायों का लेखन कार्य संपादित कर टंकित करवाना।

Scanned by TapScanner

संदर्भ गृथ सूचीः–

1. श्री दरियाव दर्शन – श्री हरिनारायण शास्त्री

(प्रकाशक– अखिल भारतीय रामस्नेही दरियाव साहित्य अनुसंधान परिषद्, रेण (नागौर)

2. श्री दरियाव दिव्य वाणी – श्री हरिनाराण शास्त्री

(प्रकाशक– अखिल भारतीय रामस्नेही दरियाव साहित्य अनुसंधान परिषद्, रेण (नागौर)

3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(प्रकाशक – नागरी प्रचारिणी सभा काशी)

4. श्री रामस्नेही मत दिग्दर्शन – श्री उत्साह राम प्राणाचार्य

(प्रकाशक– श्री साहित्यहित्य प्रकाशिका समिति, खेड़ापा)

5. श्री रामस्नेही सम्प्रदाय – श्री रामनिवास

(प्रकाशक– श्री स्वामी केवलराम आयुर्वेद सेवा निकेतन ट्रस्ट, बीकानेर)

6. श्री रामस्नेही संत काव्य रेण – डॉ. सतीश

(प्रकाशक– राजस्थान शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर)

7. राजस्थान में ग्रंथों की खोज – डॉ. हुकमसिंह भाटी

(प्रकाशक– राजस्थान शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर)

Scanned by TapScanner

संदर्भ पत्रिकाएं :–

1. कल्याण – गीताप्रेस गोरखपुर
2. परंपरा – जोधपुर
3. शोध पत्रिका – उदयपुर
4. दैनिक भास्कर – नागौर संस्करण
5. राजस्थान पत्रिका – नागौर संस्करण

11-7-18

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of supervisor with date & seal.

Scanned by TapScanner